SHRI GOKUL CHANDRA DAS

Shri Gokul Chandra Das is the protagonist and the chief mentor of Maslandapur Motilal Dhaki.com. He is widely recognized across the India and also other countries of the world for his active role in pioneering the global presence of Dhak.

2. Born on 3rd February, 1967 at Maslandapur, North 24 pargarnas in West Bengal, Shri Das since childhood performed with two abandoned sticks leading the young boy to his dream of a percussionist. He passed madhyamik in 1985, but due to family responsibilities he concentrated only in playing Dhak for little earning and to support his family. In several hurdles which embraced him during his journey which has showed the speed to his destination.

3. Shri Das started playing different "taal" which is normally played in Tabla, Pakhowaj and Dhol. Every day he is creating a new invention with a new "taal" which gave the Dhak a new Percussion identity. He is now playing in both Indian classic and western music. He is the first person in India who has introduced Dhak for women all over the world. Now a days many married, unmarried and widow women are playing Dhak and earning lively hood for their families.

4. Shri Das has performed world wide with the many legends like Ustad Zakir Hussain, Ustad Amzad Ali Khan, Pt. Ravi Shankar, Pt. Tanmoy Bose, Pt. Bikram Ghosh, Santanu Maitra, Anuska Shankar, Ms Kavita Krishna Murthy, Dr. L Subramaniam, Ustad Taufiq Qureshi, Nabin Sharma and many more. He performed in U.S.A, UK, Norway, Sri Lanka, Indonesia, Bangladesh and many other countries. He completed Senior fellowship from Ministry of Culture (C.C.R.T) Government of India. He is a part time trainer in Rabindra Bharati University. On 3rd march 2013, he established the famous organization “Maslandapur Motilal Dhaki.com”.

5. Shri Das has been honoured with several recognition and awards. He received senior diploma in tabla in 1987; senior diploma in vocal classical -1991 and "Sangeet Bishrad" in Folk song-1992. He received "Dhaki Samrat" of the world in 2004.

श्री गोकुल चन्द्र दास

श्री गोकुल चन्द्र दास मसलंदपुर मोतीलाल ढाकी.कॉम के प्रमुख नायक और मुख्य संरक्षक हैं। ढाक की वैश्विक मान्यता को आगे बढ़ाने में उनकी सक्रिय भूमिका के लिए उन्हें भारत और दुनिया के अन्य देशों में व्यापक रूप से जाना जाता है।

2. 3 फरवरी, 1967 को पश्चिम बंगाल के उत्तर 24 परगना के मसलंदपुर में जन्मे, श्री दास बचपन से ही दो बेकार छड़ियों के साथ बजाते रहे और इस तरह से युवा बालक का ताल वादक बनने का सपना पूरा हुआ। उन्होंने वर्ष 1985 में माध्यमिक परीक्षा पास की, लेकिन पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण उन्होंने थोड़ी बहुत आय के लिए और अपने परिवार का भरण–पोषण करने के लिए केवल ढाक बजाने पर ध्यान केंद्रित रखा। इस यात्रा में उन्हें कई बाधाओं का सामना करना पड़ा, जिसने उन्हें अपनी मंजिल तक पहुँचने की राह दिखाई।

3. श्री दास ने अलग–अलग "ताल" बजाना शुरू किया जो आम तौर पर तबला, पखावज और ढोल में बजाया जाता है। हर दिन वह एक नए "ताल" के साथ एक नया आविष्कार कर रहे हैं जिसने ढाक को एक नई पहचान दी है। वह अब भारतीय शास्त्रीय और पश्चिमी संगीत दोनों में बजा रहे हैं। वह भारत के पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने दुनिया भर में महिलाओं द्वारा ढाक बजाने की शुरुआत की है। आजकल कई विवाहित, अविवाहित और विधवा महिलाएँ ढाक बजा रही हैं और अपने परिवारों के लिए आजीविका कमा रही हैं।

4. श्री दास ने उस्ताद जाकिर हुसैन, उस्ताद अमजद अली खान, पंडित रविशंकर, पंडित तन्मय बोस, पंडित बिक्रम घोष, शांतनु मैत्रा, अनुष्का शंकर, सुश्री कविता कृष्ण मूर्ति, डॉ. एल सुब्रमणियम, उस्ताद तौफीक कुरैशी, नबीन शर्मा जैसे और कई अन्य दिग्गजों के साथ दुनिया भर में प्रदर्शन किया है। उन्होंने यू.एस.ए., यू.के., नॉर्वे, श्रीलंका, इंडोनेशिया, बांग्लादेश और कई अन्य देशों में अपनी कला का प्रदर्शन किया है। उन्होंने भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय (सी.सी.आर.टी.) से वरिष्ठ फेलोशिप पूरी की है। वह रवींद्र भारती विश्वविद्यालय में अंशकालिक प्रशिक्षक हैं। 3 मार्च 2013 को, उन्होंने प्रसिद्ध संगठन "मसलंदपुर मोतीलाल ढाकी डॉट.कॉम" की स्थापना की।

5. श्री दास को अनेक सम्मान और पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। उन्हें वर्ष 1987 में तबला में वरिष्ठ डिप्लोमा, वर्ष 1991 में गायन शास्त्रीय में वरिष्ठ डिप्लोमा और वर्ष 1992 में लोकगीत में "संगीत बिश्राद" का सम्मान मिला। वर्ष 2004 में उन्हें विश्व के "ढाकी सम्राट" का सम्मान मिला।